NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 16-01-2025

विषय सूची

भारत-सिंगापुर: राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष

भारत-बांग्लादेश सीमा विवाद

भारत का वाणिज्यिक वस्तु व्यापार घाटा (India's Merchandise Trade Deficit)

स्टार्टअप इंडिया के नौ वर्ष

भारत में समुद्र स्तर में वृद्धि

संक्षिप्त समाचार

काशी तमिल संगमम (Kashi Tamil Sangamam)

थारू समुदाय और माघी महोत्सव

सियाचिन ग्लेशियर (Siachen Glacier)

ब्लड मनी (Blood Money)

ग्लोबल साउथ (Global South)

पिक्सल और दिगंतारा ने पृथ्वी पर निगरानी के लिए उपग्रह प्रक्षेपित किए

कंपाला घोषणा

फ्रंटलाइन नेवल कॉम्बैटेंट्स - INS सूरत, INS नीलगिरि, और INS वाघशीर

मेलानिस्टिक रॉयल बंगाल टाइगर

भारत रणभूमि दर्शन

भारत-सिंगापुर: राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष

संदर्भ

- हाल ही में भारत और सिंगापुर ने राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ मनाई, जिसके उपलक्ष्य में सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन षणमुगरत्नम प्रथम बार भारत आए।

भारत-सिंगापुर: ऐतिहासिक संबंध

- **औपनिवेशिक विरासत:** भारत और सिंगापुर के मध्य राजनयिक संबंध 24 अगस्त, 1965 को सिंगापुर की स्वतंत्रता के तुरंत बाद स्थापित हुए थे।
    - भारत और सिंगापुर के मध्य आधुनिक संबंध 1819 से प्रारंभ हुए, जब सर स्टैमफोर्ड रैफल्स ने सिंगापुर में एक ब्रिटिश व्यापारिक चौकी स्थापित की।
- **स्वतंत्रता में भूमिका:** भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 1943 में सुभाष चंद्र बोस द्वारा सिंगापुर से आज़ाद हिंद की अनंतिम सरकार का गठन।
- **स्वतंत्रता की मान्यता:** भारत 1965 में सिंगापुर की स्वतंत्रता को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था, जिसने एक घनिष्ठ और विकसित संबंधों के लिए मंच तैयार किया।
- **व्यापक साझेदारी:** दशकों से, यह संबंध एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी में विकसित हुआ है, जो प्रगाण होते आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाता है।

सहयोग के प्रमुख क्षेत्र: भारत-सिंगापुर संबंधों का महत्त्व

- **अर्थव्यवस्था और व्यापार:** दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार वित्त वर्ष 2004-05 में 6.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में 35.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
    - सिंगापुर भारत का छठा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है, जो भारत के कुल व्यापार का 3.2% हिस्सा है।
    - वित्त वर्ष 2023-24 में, सिंगापुर से भारत का आयात 21.2 बिलियन अमरीकी डॉलर (पिछले वर्ष से 10.2% की कमी) था, जबकि सिंगापुर को निर्यात 14.4 बिलियन अमरीकी डॉलर (पिछले वर्ष से 20.2% की वृद्धि) तक पहुंच गया।

Framework of the India-Singapore Relationship
- Comprehensive Economic Cooperation Agreement, CECA (2005);
- Double Taxation Avoidance Agreement, DTAA (1994);
- Bilateral Air Services Agreement (1968);
- Defence Cooperation Agreement (2003);
- MOU on Foreign Office Consultations (1994);
- Mutual Legal Assistance Treaty (2005).

- **FDI प्रवाह:** 2023-24 के दौरान सिंगापुर से भारत में FDI इक्विटी प्रवाह 11.774 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
    - सिंगापुर से FDI इक्विटी प्रवाह को आकर्षित करने वाले शीर्ष क्षेत्र हैं: सेवा क्षेत्र, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, ट्रेडिंग, दूरसंचार और ड्रग्स एवं फार्मास्यूटिकल्स।
- **फिनटेक और डिजिटल अर्थव्यवस्था:** सिंगापुर में RuPay कार्ड और UPI-Paynow लिंकेज की स्वीकृति।
    - सिंगापुर पहला देश है जिसके साथ भारत ने सीमा पार व्यक्ति-से-व्यक्ति (P2P) भुगतान सुविधा प्रारंभ की है।

- **रक्षा और सामरिक सहयोग:** रक्षा सहयोग समझौते के अंतर्गत यह अधिक प्रगाण हुआ है।
  - **द्विपक्षीय अभ्यास:** तीनों सेवाओं के लिए:
    - अग्नि वारियर और बोल्ड कुरुक्षेत्र (सेना);
    - सिमबेक्स (नौसेना) अभ्यास।
  - **समुद्री सुरक्षा:** दोनों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता और समुद्री डकैती से निपटने के लिए मिलकर कार्य करते हैं।
  - **रणनीतिक साझेदारी:** सिंगापुर भारत की एक्ट ईस्ट नीति का समर्थन करता है, जिससे क्षेत्रीय सहयोग और उससे परे भारत की भागीदारी को बढ़ावा मिलता है।
- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग:** इसरो ने सिंगापुर के कई उपग्रहों को प्रक्षेपित किया है, सिंगापुर का प्रथम स्वदेशी निर्मित माइक्रो-सैटेलाइट 2011 में, 2014 में 2 और, 2015 में 6 और 2023 में 9 उपग्रह प्रक्षेपित किए गए।
  - सिंगापुर ने उद्घाटन आसियान-भारत महिला वैज्ञानिक सम्मेलन (2024) की सह-मेजबानी की।
  - साइबर नीति संवाद (2024)
  - डिजिटल स्वास्थ्य और चिकित्सा प्रौद्योगिकियों पर ई-कार्यशाला (2024)
- **शिक्षा और कौशल विकास:** कौशल भारत कार्यक्रम जैसी पहलों को व्यावसायिक प्रशिक्षण में सिंगापुर की विशेषज्ञता से लाभ मिलता है।
  - भारतीय और सिंगापुरी संस्थान संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों में संलग्न हैं।
- **बहुपक्षीय और क्षेत्रीय सहयोग:** सिंगापुर 2023 में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और वैश्विक जैव-ईंधन गठबंधन में शामिल हो गया है।
- सिंगापुर ने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, AI और शासन के लिए डेटा पर घोषणा की भारतीय पहल का समर्थन किया (2024 में ब्राजील में G20 शिखर सम्मेलन में)।
- **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA):** यह भारत द्वारा किसी भी देश के साथ हस्ताक्षरित पहला ऐसा समझौता था।
- **इंडो-पैसिफिक रणनीति:** भारत एवं सिंगापुर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति, स्थिरता और कनेक्टिविटी बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।
- **सांस्कृतिक संबंध:** सिंगापुर पर भारतीय प्रभाव इसके बहुसांस्कृतिक समाज में स्पष्ट है, जिसमें जीवंत भारतीय प्रवासी शहर-राज्य की जनसंख्या का लगभग 9% भाग हैं।
  - कला उत्सव जैसे कार्यक्रम और सिंगापुर में लिटिल इंडिया की उपस्थिति मजबूत सांस्कृतिक बंधनों को दर्शाती है।

भविष्य की सम्भावनाएँ

- भारत और सिंगापुर भविष्य की ओर देख रहे हैं, इसलिए व्यापक रणनीतिक साझेदारी अधिक प्रगाण होने वाली है।
- दोनों देश डिजिटलीकरण, व्यापार विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे क्षेत्रों में सहयोग के नए रास्ते खोजने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- 60वीं वर्षगांठ के समारोह ने सहयोग और आपसी विकास के एक नए युग की शुरुआत की है।

Source: DD News

भारत-बांग्लादेश सीमा विवाद

संदर्भ

- भारत ने सीमा पर सुरक्षा उपायों को लेकर बांग्लादेश के कार्यवाहक उच्चायुक्त को तलबसमान(summoned) किया।

भारत-बांग्लादेश सीमा विवाद के कारण

- सीमा प्राधिकारियों के लिए 1975 के संयुक्त भारत-बांग्लादेश दिशा-निर्देशों के अनुसार, सीमा की शून्य रेखा से 150 गज के अंदर कोई भी रक्षा संरचना नहीं बनाई जा सकती।
  - भारत तार की बाड़ को रक्षा संरचना नहीं मानता, जबकि बांग्लादेश और पाकिस्तान ऐसा मानते हैं।
- **सीमा निवासियों पर प्रभाव:** बाड़ लगाने से, विशेष रूप से सघन जनसंख्या वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में, स्थानीय जनसंख्या के लिए व्यावहारिक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।
- **CCTV और इलेक्ट्रॉनिक निगरानी:** भारत ने सीमा की निगरानी के लिए CCTV कैमरे और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट सहित उच्च तकनीक वाली निगरानी प्रणाली लागू की है।
  - इससे बांग्लादेश में संप्रभुता को लेकर चिंताएँ उत्पन्न हुई हैं, आरोप है कि इस तरह की निगरानी उसकी क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन है।

भारत-बांग्लादेश सीमा

- भारत और बांग्लादेश के मध्य 4,096.7 किलोमीटर लंबी सीमा है, जो भारत द्वारा अपने किसी भी पड़ोसी देश के साथ साझा की जाने वाली सबसे बड़ी भूमि सीमा है।
- **सीमा साझा करने वाले राज्य:** पश्चिम बंगाल (2,216.7 किलोमीटर), असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम।
- **बाड़ लगाना(Fencing):** भारत-बांग्लादेश सीमा पर, पश्चिम बंगाल सहित सभी पूर्वी राज्यों को कवर करते हुए, कुल 4,156 किलोमीटर में से 3,141 किलोमीटर पर बाड़ लगाई गई है।

सीमाओं के प्रबंधन की आवश्यकता

- **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** भारत की छिद्रपूर्ण सीमाएँ अवैध रूप से सीमा पार करने, तस्करी करने और सीमा पार आतंकवाद, विशेष रूप से पाकिस्तान में आतंकवादी समूहों से, को बढ़ावा देती हैं, जिससे सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण खतरे उत्पन्न होते हैं।
- **जनसांख्यिकीय परिवर्तन:** बांग्लादेश से अनियमित प्रवासन ने सीमावर्ती राज्यों में जनसांख्यिकीय परिदृश्य को प्रभावित किया है, जिससे सामाजिक तनाव और संसाधन वितरण में चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।
- **बुनियादी ढाँचा विकास:** भारत के कई सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों, संचार नेटवर्क और सीमा चौकियों जैसे बुनियादी ढाँचे का अभाव है, जिससे सीमा प्रबंधन प्रयासों की प्रभावशीलता में बाधा आती है।

भारत का सीमा प्रबंधन

- **सीमा निगरानी:** निरंतर निगरानी और खतरों पर त्वरित प्रतिक्रिया के लिए बाड़, फ्लडलाइट, सड़कें, सीमा चौकियाँ (BOPs) और कंपनी संचालन ठिकानों (COBs) का निर्माण।

- **सीमा सुरक्षा बल** भारत की सीमाओं पर गश्त और सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें घुसपैठ, तस्करी एवं अन्य सुरक्षा चिंताओं से निपटना शामिल है।
- **सीमा पार व्यापार:** एकीकृत चेकपोस्ट एवं व्यापार सुविधा केंद्रों के निर्माण ने सीमा शुल्क निकासी को सुव्यवस्थित किया है और व्यापार बाधाओं को कम किया है।
- **सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम (BADP):** पाकिस्तान की सीमा से लगे राज्यों - जम्मू और कश्मीर, पंजाब, गुजरात एवं राजस्थान में सीमा क्षेत्रों के संतुलित विकास के लिए 1986-87 में प्रारंभ किया गया - बाद में इसे सभी भूमि सीमाओं तक विस्तारित किया गया।

निष्कर्ष

- सीमा विवादों का समाधान राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है, विशेष रूप से सीमा पार आतंकवाद और अवैध गतिविधियों के मद्देनजर।
- भारत और बांग्लादेश के मध्य 2015 का भूमि सीमा समझौता (LBA) लंबे समय से चले आ रहे सीमा मुद्दों को सुलझाने में कूटनीतिक बातचीत के महत्त्व का प्रमाण है।

भूमि सीमा समझौता (LBA)

- भारत और बांग्लादेश के बीच 6 जून 2015 को बांग्लादेश में हस्ताक्षरित भूमि सीमा समझौता (LBA) द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्त्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।
- यह समझौता लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवादों, विशेष रूप से भारत-बांग्लादेश सीमा पर परिक्षेत्रों के आदान-प्रदान के संबंध में एक ऐतिहासिक कदम था।

समझौते की मुख्य विशेषताएँ

- **भारत से बांग्लादेश:** इस समझौते के अंतर्गत 111 भारतीय एन्क्लेव (जिन्हें चिटमहल भी कहा जाता है) बांग्लादेश को हस्तांतरित किए गए, जिनका क्षेत्रफल 17,160.63 एकड़ है।
- **बांग्लादेश से भारत:** इसके विपरीत, भारत को बांग्लादेश में स्थित 51 एन्क्लेव मिले, जिनका कुल क्षेत्रफल 7,110.02 एकड़ है।
- भूमि विनिमय में, बांग्लादेश को भारत की तुलना में भूमि का बड़ा हिस्सा मिला। यह असमानता विवाद का विषय थी, लेकिन अंततः इसे दशकों पुराने सीमा मुद्दों को हल करने के लिए आवश्यक समझौते के रूप में देखा गया।

Source: IE

भारत का व्यापारिक व्यापार घाटा (India's Merchandise Trade Deficit)

संदर्भ

- भारत का वाणिज्यिक वस्तु व्यापार घाटा दिसंबर 2024 में तीन माह के निम्नतम स्तर 21.94 बिलियन डॉलर पर आ गया।

परिचय

- दिसंबर 2024 में भारत के व्यापारिक निर्यात में वर्ष-दर-वर्ष 1% की गिरावट आई, जबकि आयात में 4.9% की वृद्धि हुई।

- ○ इससे पहले, नवंबर में देश का वाणिज्यिक वस्तु व्यापार घाटा बढ़कर 37.84 बिलियन डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

भारत का कुल व्यापार घाटा

- वित्त वर्ष 2023-24 (अप्रैल-मार्च) में भारत के व्यापार घाटे में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- वित्त वर्ष 2023-24 (अप्रैल-मार्च)* के लिए कुल व्यापार घाटा 78.12 बिलियन अमरीकी डॉलर रहने की संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2022-23 (अप्रैल-मार्च) के दौरान घाटा 121.62 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जो (-) 35.77 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है।
- वित्त वर्ष 2023-24 (अप्रैल-मार्च) के दौरान वाणिज्यिक वस्तु व्यापार घाटा 240.17 बिलियन अमरीकी डॉलर है, जबकि वित्त वर्ष 2022-23 (अप्रैल-मार्च) के दौरान यह 264.90 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जो (-) 9.33 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है।

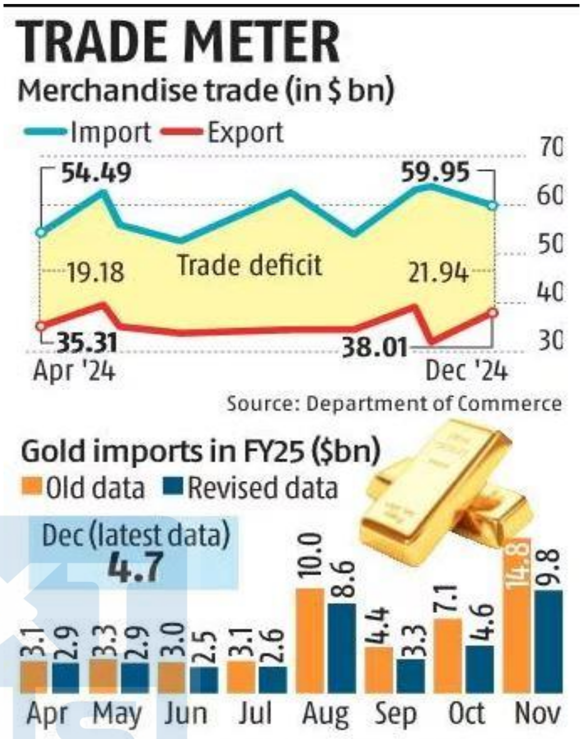

व्यापार घाटा और व्यापारिक व्यापार घाटा के बीच अंतर:

पहलू	व्यापार घाटा	वाणिज्यिक वस्तु व्यापार घाटा
परिभाषा	ऐसी स्थिति जहाँ किसी देश का कुल आयात, वस्तुओं और सेवाओं सहित, उसके कुल निर्यात से अधिक हो।	व्यापार घाटे का एक विशिष्ट प्रकार जो केवल भौतिक वस्तुओं (माल) के आयात और निर्यात के संतुलन से संबंधित है।
व्यापक दायरा	व्यापक, क्योंकि इसमें वस्तुएँ और सेवाएँ दोनों शामिल हैं।	संकीर्ण, विशेष रूप से वस्तुओं (माल) पर केंद्रित।
पॉलिसी फोकस	प्रायः व्यापार समझौतों, मुद्रा मूल्यों या राजकोषीय नीतियों सहित व्यापक आर्थिक नीति समायोजन की आवश्यकता होती है।	मुख्य रूप से उन नीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया जो वस्तुओं के भौतिक व्यापार को प्रभावित करती हैं, जैसे टैरिफ या व्यापार बाधाएँ।

व्यापार घाटे के कारण

- **कच्चे तेल का उच्च आयात:** भारत कच्चे तेल का एक प्रमुख आयातक है, जो वैश्विक तेल की बढ़ती कीमतों के कारण इसके व्यापार घाटे में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

- **सोने का आयात:** भारत में सोने की, विशेष रूप से आभूषणों की, बहुत अधिक माँग है, जिसके कारण आयात बिल अधिक है।
- **वैश्विक आर्थिक परिस्थितियाँ:** प्रमुख व्यापारिक साझेदारों (जैसे अमेरिका, चीन और यूरोपीय संघ) में आर्थिक वृद्धि या मंदी भारतीय निर्यात की माँग को प्रभावित करती है, जिससे व्यापार संतुलन प्रभावित होता है।
- **उच्च आयात माँग:** कच्चे तेल, सोना, इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसी वस्तुओं की बढ़ती घरेलू माँग से आयात बढ़ता है, जिससे व्यापार घाटा बढ़ता है।
- **सीमित निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता:** सेवा निर्यात में वृद्धि के बावजूद, भारत का व्यापारिक निर्यात उसी गति से नहीं बढ़ा है, जिससे आयात और निर्यात के मध्य असंतुलन उत्पन्न होता है।
- **विनिर्माण में संरचनात्मक असंतुलन:** भारत के विनिर्माण क्षेत्र को अभी भी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने और आगे बढ़ने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे औद्योगिक इनपुट एवं तैयार माल के लिए आयात पर निर्भरता बढ़ रही है।
- **रुपये का अवमूल्यन:** कमजोर भारतीय रुपया आयात की लागत बढ़ाता है, जिससे व्यापार घाटा बढ़ता है।

चुनौतियाँ

- **विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव:** लगातार व्यापार घाटा विदेशी मुद्रा भंडार को कम करता है, जिससे देश की बाहरी वित्तीय दायित्वों को पूरा करने की क्षमता प्रभावित होती है।
- **मुद्रा अवमूल्यन:** उच्च व्यापार घाटा भारतीय रुपये को कमजोर करता है, जिससे आयात की लागत बढ़ती है और मुद्रास्फीति बढ़ती है।
- **बढ़ता राजकोषीय घाटा:** व्यापार घाटे को वित्तपोषित करने के लिए अधिक उधार लेने की आवश्यकता होती है, जिससे सरकारी वित्त पर दबाव पड़ता है।
- **आर्थिक विकास पर प्रभाव:** यदि घाटा लंबे समय तक जारी रहता है, तो यह आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करता है, जिससे दीर्घकालिक विकास की संभावनाएँ और घरेलू उद्योग प्रभावित होते हैं।

व्यापार घाटे में सुधार के उपाय

- **निर्यात को बढ़ावा देना:** भारत ने प्रोत्साहनों, व्यापार समझौतों और वस्त्र, फार्मास्यूटिकल्स और IT जैसे क्षेत्रों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के माध्यम से निर्यात बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है।
- **"मेक इन इंडिया" पहल को बढ़ावा देना:** घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करना और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं मशीनरी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देकर आयात पर निर्भरता को कम करना।
- **विदेशी निवेश को आकर्षित करना:** घरेलू उद्योगों का समर्थन करने, आयात निर्भरता को कम करने और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को प्रोत्साहित करना।
- **व्यापार भागीदारों में विविधता लाना:** कुछ क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए विशेष रूप से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया में नए बाजारों के साथ व्यापार संबंधों का विस्तार करना।
- **बुनियादी ढाँचे में सुधार:** लागत कम करने और निर्यात दक्षता में सुधार करने के लिए बंदरगाह सुविधाओं, रसद एवं परिवहन बुनियादी ढाँचे को बढ़ाना।

आगे की राह

- निर्यात प्रतिस्पर्धा को सुदृढ़ करना।
- घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना।
- अक्षय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देकर और ऊर्जा दक्षता में सुधार करके कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करना।
- वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता को कम करने के लिए पारंपरिक भागीदारों से परे देशों के साथ व्यापार संबंधों का विस्तार करना।

Source: TH

स्टार्टअप इंडिया के नौ वर्ष

समाचार में

- हाल ही में भारत ने स्टार्टअप इंडिया पहल की नौवीं वर्षगाँठ मनाई।

स्टार्टअप इंडिया पहल

- **परिचय:** इसे 16 जनवरी, 2016 को लॉन्च किया गया था और इसका प्रबंधन उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा किया जाता है।
    - इस प्रमुख पहल का उद्देश्य स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देना और नवाचार एवं उद्यमिता के लिए एक समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
    - **व्यापार करने में आसानी:** सरलीकृत अनुपालन, स्व-प्रमाणन और एकल-खिड़की मंजूरी स्टार्टअप के लिए प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करती है।
    - **कर लाभ:** पात्र स्टार्टअप लगातार तीन वित्तीय वर्षों के लिए कर छूट का लाभ लेते हैं।
    - **वित्त पोषण सहायता:** स्टार्टअप के लिए ₹10,000 करोड़ का फंड ऑफ फंड्स (FFS) प्रारंभिक चरण के वित्तपोषण का समर्थन करता है।
    - **क्षेत्र-विशिष्ट नीतियाँ:** जैव प्रौद्योगिकी, कृषि और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों के लिए केंद्रित नीतियाँ लक्षित विकास को बढ़ावा देती हैं।
- **स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत प्रमुख योजनाएँ:**
    - **स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS):** पात्र इनक्यूबेटरों के माध्यम से अवधारणा के प्रमाण, प्रोटोटाइप विकास, उत्पाद परीक्षण, बाजार में प्रवेश और व्यावसायीकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
    - **स्टार्टअप्स के लिए क्रेडिट गारंटी योजना (CGSS):** अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों, NBFC और SEBI-पंजीकृत उद्यम ऋण निधियों द्वारा DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स को ऋण के लिए क्रेडिट गारंटी प्रदान करता है।
    - **स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS):** घरेलू पूंजी तक पहुँच बढ़ाने के लिए ₹10,000 करोड़ के कोष के साथ जून 2016 में प्रस्तुत किया गया। SIDBI द्वारा प्रबंधित, यह योजना प्रत्यक्ष स्टार्टअप्स में निवेश नहीं करती है, बल्कि SEBI-पंजीकृत वैकल्पिक निवेश कोष (AIF) को धन

मुहैया कराती है, जो इक्विटी और इक्विटी-लिंक्ड इंस्ट्रूमेंट्स के माध्यम से स्टार्टअप्स में आगे निवेश करते हैं।
  - **भास्कर प्लेटफॉर्म:** सितंबर 2024 में लॉन्च किया गया, यह स्टार्टअप्स, निवेशकों और परामर्शदाताओं को जोड़ता है, गैर-मेट्रो शहरों को सशक्त बनाता है।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- **स्टार्टअप इकोसिस्टम में वृद्धि:** मान्यता प्राप्त स्टार्टअप 2016 में लगभग 500 से बढ़कर 1.59 लाख हो गए हैं, जिससे भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब बन गया है।
- **रोजगार सृजन:** 16.6 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुईं, जिनमें प्रमुख क्षेत्र IT सेवाएँ (2.04 लाख रोजगार), स्वास्थ्य सेवा (1.47 लाख रोजगार) और शिक्षा (90,414 रोजगार) सम्मिलित हैं।
- **महिला उद्यमिता:** 73,151 स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक हैं, जो इकोसिस्टम में महिलाओं की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है।
- **वित्तीय सहायता:** ₹10,000 करोड़ फंड ऑफ फंड्स और स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS) ने शुरुआती चरण के वित्तपोषण का समर्थन किया है।
- **क्षेत्रीय विकास:** फिनटेक, एडटेक, हेल्थ-टेक और ई-कॉमर्स में स्टार्टअप तीव्रता से बढ़ रहे हैं, जिसमें ज़ोमैटो, नाइका और ओला जैसी कंपनियाँ रोजगार के बाज़ार को बदल रही हैं।

चुनौतियाँ

- **विनियामक वातावरण:** विनियामक ढाँचे प्रायः तीव्र नवाचार के साथ सामंजस्य रखने में संघर्ष करते हैं, जिससे स्टार्टअप के लिए अनिश्चितता उत्पन्न होती है।
- **कुशल कार्यबल और मार्गदर्शन की कमी:** कुशल पेशेवरों की कमी से स्टार्टअप के लिए सही प्रतिभा को नियुक्त करना मुश्किल हो जाता है।
- **बुनियादी ढाँचे के मुद्दे:** इंटरनेट कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स सहित छोटे शहरों में खराब बुनियादी ढाँचा विकास में बाधा उत्पन्न करती है।
- **डिजिटल असमानता और ग्रामीण-शहरी विभाजन:** शहरी समकक्षों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में स्टार्टअप को सीमित संसाधनों, बाजार तक पहुँच और प्रतिभा का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- जैसे-जैसे भारत नवाचार एवं उद्यमिता में वैश्विक नेता बनने की ओर अग्रसर है, स्टार्टअप इंडिया पहल आर्थिक विकास को गति देने और एक विविध उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
- इसके प्रभाव को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए, विनियामक बाधाओं, कौशल अंतराल एवं बुनियादी ढाँचे की कमियों जैसी चुनौतियों का समाधान करना महत्त्वपूर्ण है।

Source: TH

भारत में समुद्र स्तर में वृद्धि

संदर्भ

- पिछले तीन दशकों में केरल के समुद्र तट में नाटकीय रूप से बदलाव आया है, तटीय कटाव, बढ़ते समुद्री स्तर और मानवीय हस्तक्षेप की निरंतर शक्तियों के कारण यह सिकुड़ता जा रहा है।

- केरल के 55% से अधिक समुद्र तट को अब असुरक्षित के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिससे नौ तटीय जिलों में 9.3 मिलियन से अधिक लोगों की आजीविका को खतरा है।

भारत भर में समुद्र स्तर में वृद्धि

- इससे पहले, सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी (CSTEP) द्वारा प्रकाशित "चयनित भारतीय तटीय शहरों के लिए समुद्र तल वृद्धि परिदृश्य और जलप्लावन मानचित्र" शीर्षक वाली रिपोर्ट, 15 भारतीय तटीय शहरों पर समुद्र तल वृद्धि (SLR) के अनुमानित प्रभावों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।
- रिपोर्ट में बताया गया है कि भारतीय तटीय शहरों में समुद्र का स्तर काफी बढ़ गया है, जिसमें मुंबई में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई है, उसके बाद हल्दिया और विशाखापत्तनम का स्थान है।
- 2040 तक, मुंबई, यनम एवं थूथुकुडी में 10% से अधिक भूमि जलमग्न होने का अनुमान है, जबकि पणजी और चेन्नई में 5%-10% जलमग्नता देखी जा सकती है।
- कोच्चि, मंगलुरु और पुरी जैसे अन्य शहर 1%-5% जलमग्नता का सामना कर रहे हैं।
- यह बढ़ते समुद्र के स्तर के प्रभाव को कम करने के लिए स्थानीय अनुकूलन और लचीलापन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता पर बल देता है।

समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण

- **बढ़ता तापमान:** जीवाश्म ईंधन के जलने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक तापमान में लगातार वृद्धि हुई है।
- **पिघलते ग्लेशियर और बर्फ की टोपियाँ:** जैसे-जैसे वैश्विक तापमान बढ़ता है, बर्फ पिघलती है, जिससे महासागरों में अधिक जल जमा होता है।
- **तापीय विस्तार:** जैसे-जैसे समुद्री जल गर्म होता है, यह फैलता है, अधिक जगह घेरता है और समुद्र का स्तर बढ़ाता है।

समुद्र स्तर में वृद्धि से जुड़ी चुनौतियाँ

- जिन प्रमुख क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ेगा उनमें जल, कृषि, वन और जैव विविधता तथा स्वास्थ्य शामिल हैं।
- **तटीय बाढ़:** निचले तटीय क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति बढ़ेगी, जिससे समुदाय विस्थापित होंगे और बुनियादी ढाँचे को हानि पहुँचेगा।
- **कृषि प्रभाव:** स्वच्छ जल के स्रोतों में लवणीय जल का प्रवेश, जिससे फसल उत्पादन प्रभावित होगा।
- **लोगों का विस्थापन:** तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों के लिए खतरा, अंतर्देशीय क्षेत्रों पर प्रवास और दबाव में वृद्धि।
- **आर्थिक हानि:** बंदरगाहों, पर्यटन एवं मछली पकड़ने के उद्योगों को हानी, जिससे आजीविका और अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत के प्रयास

- **नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार:** भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लिए महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, जिसका उद्देश्य अपनी क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि करना है।

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएँ:** भारत पेरिस समझौते पर हस्ताक्षरकर्ता है और उसने 2030 तक अपनी बिजली की 50% माँग नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरी करने का लक्ष्य घोषित किया है।
- **वनीकरण और वन संरक्षण:** वन क्षेत्र को बढ़ाने, बंजर भूमि को पुनर्स्थापित करने और स्थायी वन प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम हैं।
- **स्वच्छ परिवहन:** भारत इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) को अपनाने को बढ़ावा दे रहा है और उसने 2030 तक 30% EVs बाजार हिस्सेदारी का लक्ष्य रखा है।
- **जलवायु प्रतिरोधकता:** इसमें जलवायु-प्रतिरोधकता फसल किस्मों, जल संरक्षण तकनीकों और आपदा तैयारी उपायों का विकास शामिल है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन जैसी पहलों में शामिल होना।

भारत की तटरेखा

- हाल ही में गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की तटरेखा पाँच दशकों में लगभग आधी हो गई है - 1970 में 7,516 किमी से 2023-24 में 11,098 किमी तक - बंगाल, गुजरात और गोवा जैसे राज्यों ने अपनी तटरेखा में वृद्धि की है जबकि पुडुचेरी की तटरेखा में 10.4% की कमी आई है।
- यह पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा है।
- **राज्य:** गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल।
  - गुजरात की तटरेखा भारत में सबसे लंबी है।
- **केंद्र शासित प्रदेश:** दमन और दीव, लक्षद्वीप, पुडुचेरी और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह।

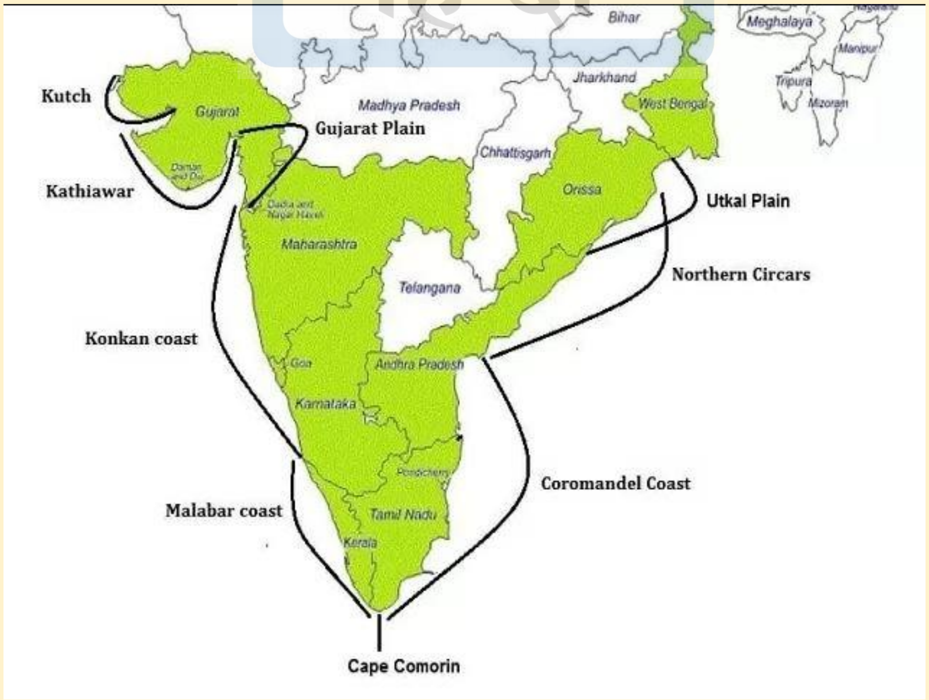

Source: TOI

संक्षिप्त समाचार

काशी तमिल संगमम (Kashi Tamil Sangamam)

संदर्भ

- केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने काशी तमिल संगमम (KTS) के तीसरे संस्करण के लिए पंजीकरण पोर्टल लॉन्च किया।

परिचय

- यह 15 फरवरी 2025 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में प्रारंभ होगा।
- **आयोजक:** शिक्षा मंत्रालय।
- **प्रारंभ :** 2022।
- **विश्वविद्यालय:** IIT मद्रास और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)।
- **उद्देश्य:** तमिलनाडु और काशी के मध्य सदियों पुराने संबंधों को फिर से खोजना, पुष्टि करना और उनका जश्न मनाना।
    - यह NEP 2020 के भारतीय ज्ञान प्रणालियों को ज्ञान की आधुनिक प्रणालियों के साथ एकीकृत करने पर बल देने के अनुरूप है।
    - यह दोनों क्षेत्रों के विद्वानों, छात्रों, दार्शनिकों और कलाकारों को अपना ज्ञान साझा करने का अवसर प्रदान करता है।
    - इसका उद्देश्य युवाओं को जागरूक करना और सांस्कृतिक एकता का अनुभव कराना भी है।
- काशी और चेन्नई दोनों को यूनेस्को द्वारा '**संगीत के रचनात्मक शहर**' के रूप में मान्यता दी गई है।

Source: PIB

थारू समुदाय और माघी महोत्सव

संदर्भ

- मोरंग जिले में थारू सांस्कृतिक संग्रहालय एक सप्ताह तक चलने वाले माघी पर्व (माघी महोत्सव) का आयोजन कर रहा है।

परिचय

- मकर संक्रांति, जिसे लोकप्रिय रूप से माघी भी कहा जाता है, थारू समुदाय के लोग अपने नए वर्ष के प्रारंभ के रूप में मनाते हैं।
- यह चंद्र कैलेंडर के अनुसार नेपाली महीने माघ के पहले दिन मनाया जाता है।
- **नृत्य:** थारू समुदाय झूमरा, मयूर, लठवा और मघौता जैसे त्योहारों के दौरान पारंपरिक नृत्य करता है।

थारू समुदाय

- थारू समुदाय एक स्वदेशी जातीय समूह है जो मुख्य रूप से नेपाल के तराई क्षेत्र और भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार एवं उत्तराखंड के आस-पास के क्षेत्रों में रहता है।

- वे थारू या थारुहाटी नामक भाषा बोलते हैं, जो इंडो-आर्यन भाषा समूह का भाग है।
- थारू जनजाति को 1967 में भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी गई थी।

Source: AIR

सियाचिन ग्लेशियर (Siachen Glacier)

समाचार में

- विश्व के सबसे ऊँचे और सबसे ठंडे युद्धक्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर को अब हाई-स्पीड 4G और 5G कनेक्टिविटी से लैस कर दिया गया है।

सियाचिन ग्लेशियर के संबंध में

- सियाचिन ग्लेशियर एक गिरिपद ग्लेशियर है, जो पहाड़ों के तल पर एक मैदान में फैला हुआ है। ताजिकिस्तान में फेडचेंको ग्लेशियर के बाद यह विश्व का दूसरा सबसे लंबा गैर-ध्रुवीय ग्लेशियर है।
- यह पश्चिम में साल्टोरो रिज और पूर्व में मुख्य काराकोरम श्रेणी के मध्य कराकोरम श्रेणी में स्थित है।
- ग्लेशियर इंदिरा कॉल वेस्ट के पास से उद्गमित होता है, जो मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच की सीमा को चिह्नित करता है।
- ग्लेशियर नुबरा नदी को जल पोषण करता है, जो श्योक नदी की एक सहायक नदी है। श्योक नदी बड़ी सिंधु नदी प्रणाली का हिस्सा है।
- भारत ने ऑपरेशन मेघदूत (1984) के अंतर्गत ग्लेशियर पर नियंत्रण कर लिया, जिससे पाकिस्तान की इस पर नियंत्रण करने की योजना विफल हो गई।

Source: FE

ब्लड मनी (Blood Money)

संदर्भ

- यमन के एक न्यायालय द्वारा भारतीय मूल की एक नर्स को सुनाई गई मौत की सजा ने एक बार फिर 'ब्लड मनी' पर ध्यान केंद्रित कर दिया है।

परिचय

- 'ब्लड मनी' या 'दीया' इस्लामी शरिया कानून में शामिल है और इन कानूनों को सम्मिलित करने वाले देशों में इसका पालन किया जाता है।
- **प्रावधान:** अपराध करने वाले को पीड़ित को या पीड़ित के परिवार को, यदि पीड़ित की मृत्यु हो गई है, तो एक मूल्यवान संपत्ति की एक निश्चित मात्रा, मुख्य रूप से मौद्रिक, का भुगतान करना होता है।
  - यह अनजाने में की गई हत्या और गैर इरादतन हत्या से जुड़े मामलों में किया जाता है।
  - यह मृत्युदंड जैसी कठोर सजा से बचने और दया के बदले पीड़ित के परिवार को मौद्रिक मुआवजा प्रदान करने के लिए किया जाता है।
  - यह प्रणाली अपराधी के भाग्य को पीड़ित के परिवार के हाथों में छोड़ देती है।
- **भारत:** भारत की औपचारिक कानूनी प्रणाली में ब्लड मनी की अवधारणा नहीं पाई जाती है।

 - हालाँकि, यह प्रणाली अभियुक्त को 'प्ली बार्गेनिंग' के माध्यम से अभियोजन पक्ष के साथ बातचीत करने का एक तरीका प्रदान करती है।

Source: TH

ग्लोबल साउथ (Global South)

समाचार में

- WCDM-DRR पुरस्कार समारोह में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल के संबोधन के अनुसार, भारत को मानवीय संकटों के दौरान वैश्विक दक्षिण में प्रथम प्रतिक्रियादाता के रूप में मान्यता दी गई है।

ग्लोबल साउथ

- ग्लोबल साउथ का तात्पर्य विकासशील या कम विकसित देशों से है, जो अधिकांशतः अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में हैं।
- **उत्पत्ति:** "ग्लोबल साउथ" शब्द का प्रयोग प्रथम बार 1969 में कार्ल ओग्लेसबी ने किया था और 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद इसे प्रमुखता मिली, जिसने "थर्ड वर्ल्ड" शब्द का स्थान लिया, जिसका प्रयोग 1952 से किया जा रहा था।
  - यह साझा राजनीतिक, भू-राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों को दर्शाता है।
- **विशेषताएँ:** यह ग्लोबल नॉर्थ (उत्तरी अमेरिका, यूरोप एवं ओशिनिया के समृद्ध राष्ट्र) की तुलना में कम आय, उच्च असमानता और खराब जीवन स्थितियों की विशेषता है।
  - ग्लोबल साउथ के देश बड़े पैमाने पर साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के शिकार थे, जिसने उनके राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण को आकार दिया, जो प्रायः महान शक्तियों के साथ गुटनिरपेक्षता की ओर ले जाता है।
- **भारत का हस्तक्षेप:** भारत को विशेष रूप से ग्लोबल साउथ में एक विश्वसनीय एवं जिम्मेदार भागीदार के रूप में मान्यता प्राप्त है, और यह SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) दृष्टिकोण के माध्यम से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा एवं विकास को बढ़ावा देता है।
  - भारत सरकार घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपदा राहत प्रयासों का समर्थन करती है और वैश्विक नेतृत्व का प्रदर्शन करती है, जिसमें 'वैक्सीन मैत्री' पहल के माध्यम से कोविड-19 महामारी के दौरान किया गया योगदान भी शामिल है।

Source :PIB

पिक्सल और दिगंतारा ने पृथ्वी पर निगरानी के लिए उपग्रह प्रक्षेपित किए

संदर्भ

- भारतीय अंतरिक्ष स्टार्ट-अप पिक्सल और दिगंतारा ने स्पेसएक्स (SpaceX) रॉकेट के जरिए सफलतापूर्वक उपग्रहों का प्रक्षेपण किया।

परिचय

- इस मिशन का उद्देश्य कृषि, रक्षा एवं अंतरिक्ष स्थिरता में महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करते हुए पृथ्वी अवलोकन और अंतरिक्ष वस्तु ट्रैकिंग को बढ़ाना है।
- **पिक्सेल:** यह भारत की प्रथम निजी कंपनी बन गई है जिसने उन्नत हाइपर-स्पेक्ट्रल आवृत्ति प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उपग्रहों का अपना समूह स्थापित किया है।
  - यह 150 से अधिक बैंड में पृथ्वी का अवलोकन करने में सक्षम बनाता है।
- **दिगंतरा एयरोस्पेस:** इसने विश्व का प्रथम वाणिज्यिक उपग्रह, स्पेस कैमरा फॉर ऑब्जेक्ट ट्रैकिंग (SCOT) प्रस्तुत किया, जिसे अंतरिक्ष संचालन सुरक्षा को बढ़ाने के लिए पृथ्वी की कक्षा में 5 सेमी जितनी छोटी वस्तुओं को ट्रैक करने के लिए तैयार किया गया है।

भारत का निजी अंतरिक्ष क्षेत्र

- भारत वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का 2-3% भाग है और 2030 तक इसकी हिस्सेदारी 10% से अधिक होने की संभावना है।
- भारतीय स्टार्ट-अप अंतरिक्ष बाजार में सक्रिय रुचि ले रहे हैं, 2012 में अंतरिक्ष क्षेत्र में सिर्फ 1 स्टार्ट-अप से 2023 में 189 स्टार्ट-अप हो गए हैं।
- इन स्टार्ट-अप को प्राप्त वित्तपोषण 2021 में $67.2 मिलियन से बढ़कर 2023 में कुल $124.7 मिलियन तक पहुँच गई।

Source: FE

कंपाला घोषणा

संदर्भ

- 2026 से 2035 तक अफ्रीका की कृषि-खाद्य प्रणालियों के लिए कंपाला घोषणा को व्यापक अफ्रीका कृषि विकास कार्यक्रम (CAADP) पर असाधारण अफ्रीकी संघ शिखर सम्मेलन में अपनाया गया।

परिचय

- नया घोषणापत्र मालाबो घोषणापत्र का उत्तराधिकारी है।
- शिखर सम्मेलन के दौरान, अफ्रीकी नेताओं ने दस वर्षीय CAADP कार्य योजना (2026-2035) का समर्थन किया, जिसमें पूरे अफ्रीका में कृषि को बदलने के लिए एक विस्तृत रोडमैप की रूपरेखा तैयार की गई।

कंपाला घोषणा के उद्देश्य

- सतत खाद्य उत्पादन, कृषि-औद्योगीकरण और व्यापार को तीव्र करना,
- त्वरित कृषि खाद्य प्रणालियों के परिवर्तन के लिए निवेश और वित्तपोषण को बढ़ावा देना,
- खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना,
- समावेशीपन और न्यायसंगत आजीविका को आगे बढ़ाना,
- लचीली कृषि खाद्य प्रणालियों का निर्माण करना,
- कृषि खाद्य प्रणालियों के प्रशासन को सुदृढ़ करना।

मालाबो घोषणा

- 2003 में, मापुटो, मोजाम्बिक में अफ्रीकी संघ विधानसभा के दूसरे साधारण सत्र के दौरान, अफ्रीका में कृषि और खाद्य सुरक्षा पर मापुटो घोषणा को अपनाया गया था।
- इस घोषणा ने व्यापक अफ्रीका कृषि विकास कार्यक्रम (या CAADP) की आधिकारिक शुरुआत को चिह्नित किया।

Source: **DTE**

फ्रंटलाइन नेवल कॉम्बैटेंट्स - INS सूरत, INS नीलगिरि, और INS वाघशीर

समाचार में

- भारत ने INS नीलगिरि, INS वाघशीर और INS सूरत को सम्मिलित करके नौसेना प्लेटफार्मों की पहली त्रिकोणीय कमीशनिंग प्राप्त की।

नौसैनिक प्लेटफार्मों के संबंध में

- **INS नीलगिरि परियोजना 17A** फ्रिगेट का प्रमुख जहाज है और यह चोल वंश के समुद्री इतिहास का सम्मान करता है।
  - यह भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया अगली पीढ़ी का स्टील्थ फ्रिगेट है।
- **INS वाघशीर पी 75** स्कॉर्पीन परियोजना की छठी और अंतिम पनडुब्बी है।
  - यह भारत की नौसेना विरासत को समर्पित है और इसका निर्माण फ्रांस के नौसेना समूह के सहयोग से किया गया है।
- **INS सूरत परियोजना** का चौथा एवं अंतिम जहाज है और यह पश्चिम एशिया के साथ गुजरात के ऐतिहासिक समुद्री संबंधों को दर्शाता है।
  - 75% स्वदेशी सामग्री वाला एक अत्याधुनिक विध्वंसक।

महत्त्व

- यह कमीशनिंग भारत की रक्षा में आत्मनिर्भरता और नौसेना को मजबूत करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
  - भारत का रक्षा उत्पादन 1.25 लाख करोड़ रुपये से अधिक है, जिसमें 100 से अधिक देश भारतीय रक्षा उपकरण आयात करते हैं।
  - मेक इन इंडिया पहल आर्थिक विकास और रक्षा में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रही है।

Source :TH

मेलानिस्टिक रॉयल बंगाल टाइगर

समाचार में

- ओडिशा के **सिमिलिपाल टाइगर रिजर्व** में शिकारियों द्वारा एक **मेलेनिस्टिक रॉयल बंगाल टाइगर (RBT)** का शिकार किया गया, जो इन दुर्लभ काले धारीदार बाघों के लिए विश्व का एकमात्र निवास स्थान है।

ब्लैक टाइगर्स

- **ब्लैक टाइगर्स का परिचय :** ब्लैक टाइगर्स कोई अलग प्रजाति या उप-प्रजाति नहीं हैं, बल्कि बंगाल बाघ का एक दुर्लभ रंग रूप हैं।
    - उनके विशिष्ट फर पैटर्न मेलेनिज़्म से उत्पन्न होते हैं, जो एक आनुवंशिक स्थिति है (जीन ट्रॉंसमेम्ब्रेन एमिनोपेप्टिडेज़ क्यू में उत्परिवर्तन)। सफेद फर पिगमेंट फ़ेओमेलानिन की कमी के कारण होता है।
    - मेलेनिस्टिक बाघ अपने गैर-मेलेनिस्टिक समकक्षों की तुलना में तेज़ी से बढ़ते हैं और प्रायः भारी होते हैं।
- **आनुवंशिक विचलन:** भौगोलिक अलगाव के कारण सिमिलिपाल में अंतःप्रजनन को बढ़ावा मिला है, जहाँ आनुवंशिक रूप से संबंधित बाघ विभिन्न पीढ़ियों से संभोग करते आ रहे हैं, जिससे उत्परिवर्तन में वृद्धि हुई है।
- **सिमिलिपाल से परे ब्लैक टाइगर्स:** नंदनकानन जूलॉजिकल पार्क, भुवनेश्वर, रांची चिड़ियाघर, अरिग्नार अन्ना जूलॉजिकल पार्क, चेन्नई में कैद में पाए गए

सिमिलिपाल राष्ट्रीय उद्यान

- सिमिलिपाल भारत के सबसे बड़े बायोस्फीयर में से एक है, जिसे प्रोजेक्ट टाइगर (1973) के अंतर्गत बाघ अभयारण्य के रूप में नामित किया गया है। जून 1994 में भारत सरकार द्वारा बायोस्फीयर रिजर्व के रूप में मान्यता दी गई।
- इसका नाम इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सिमुल वृक्ष (रेशमी कपास) के नाम पर रखा गया है।
- मई 2009 में यूनेस्को की बायोस्फीयर रिजर्व सूची में जोड़ा गया।
- सिमिलिपाल में विश्व में सबसे अधिक काले बाघ देखे जाते हैं, जो इसे इस दुर्लभ प्रजाति के लिए एक महत्त्वपूर्ण निवास स्थान बनाता है।

Source: TOI

भारत रणभूमि दर्शन

समाचार में

- सेना दिवस (15 जनवरी) के अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक समर्पित वेबसाइट - भारत रणभूमि दर्शन को लॉन्च किया ।

भारत भूमि दर्शन का परिचय

- भारत रणभूमि दर्शन वेबसाइट पर विभिन्न युद्धक्षेत्रों जैसे गलवान (2020), डोकलाम (2017) एवं भारत की सीमाओं पर 75 अन्य स्थलों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी, जिसमें वर्चुअल टूर, ऐतिहासिक कथाएँ और इंटरैक्टिव सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा अतुल्य भारत अभियान के अंतर्गत इन स्थलों को भी हाइलाइट किया जाएगा।

Source: IE

■■■■